पूँछ हिलाने की संस्कृति

सुरेश आचार्य

© लेखक

प्रथम संस्करण : 1984
द्वितीय संस्करण : 2015

ISBN 978-93-83962-12-9

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-22825424, 09350809192
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 200.00 रुपये

आवरण : मुन्ना कुमार

मुद्रक : सौरभ प्रिंटर्स प्रा. लि., ग्रेटर नोएडा (उत्तर प्रदेश)

अनुक्रम

मेरी बात – *लक्ष्मी पाण्डेय*	7
कैफ़ियत – *सुरेश आचार्य*	9
ये रचनाएँ – *हरिशंकर परसाई*	11
पूँछ हिलाने की संस्कृति	13
जादू वाले–वो जो हैं	16
किराये का मकान उर्फ बसना बालम का मन में	19
कहाँ मिलाप में वह बात जो बिगाड़ में है	22
सूखा राहत बाढ़ में बह गयी	25
उस बात को खारिज़ करिए	28
फ़सले बहार आयी, पियो सूफ़ियों शराब	31
एक आदम की करुण-गाथा	34
छोटे गुरु की कथा	37
बिगड़ना बलम का और न खाना सुपारी	39
दो पैरों वाला कुत्ता	41
लौटना वापस जादुई चिराग का	43
विश्राम गृहों की बेताल-कथा	46
पुल का शिलान्यास उर्फ अध्यक्षता का धर्मयुद्ध	49
पोज़ीशन सॉलिड है	52
द फटूरे ऑफ इण्डिया	56
हथझोले में ई. सी. जी.	59
खूबसूरत बदतमीजियाँ और बदसूरत सच्चाइयाँ	61
यों हाल यह कि आ गया पानी गले-गले	64
फूलसींग की लाज बचायी श्री भगवान ने	67
फुड ऑफिस में कविता कक्ष	69
जब मन्त्री जी आये तो चले गये हनुमान	72
मूत्रपान करना : पिस्ते के स्वाद वाला	75
जाना और न जाना अस्पताल का	78
खाना और रोना भारत माँ के लाल का	80
तेरी गठरी में लागे चोर : मुसाफिर जाग जरा	82
वह हमारी पनैंयों का प्रताप है बुश साहब	85
किस्सा नगीना-ए-जहान उर्फ विश्व-रत्न का	88

हमारी गली के गौतम बुद्ध 91
ऊपर की और नीचे की पुलिस 94
दिल जला और फिर कलेजा जल गया 97
आत्महत्या करने वाले और शरीर शास्त्री 100
कबीरा सोई पीर है जो जाने परपीर 102
जो अनायास पाँव छूता है : आदमी नहीं है, जूता है 105
पुन का फल डुन 108
झण्डा ऊँचा रहे हमारा 111
कसम से आँख नहीं ठहरती 114
हलो : मसानगंज से भूत बोल रहा हूँ 117
साधु-साधु और धन्य-धन्य है तुझे समोसे 121
वोटर असली दद्दा है 124
तेरी गठरी में लागे चोर 127
सैयाँ झूठों का बड़ा सरताज निकला 130
न कोई शोरगुल चिकचिक उर्फ़ जलेबियाँ बनाने वाले 133
अधकचरी अँग्रेजियत के परिणाम 136
आखिर मक्खी गुड़ पर उर्फ़ बाबा जी की जय-जय 139
बसि कुसंग चाहत कुसल : यह रहीम अफसोस 142
तीन देवियों के मारे हैं : तीन तिलंगे बेचारे 145
सुन्दरियों को देखकर सीटियाँ बजाने वाले 148
भैया जी : रियल ईडियट्स हम हैं हम 151
हमने कर दी है खबर तुमको खबरदार रहो! 154
अपना-अपना दुःख और अपना-अपना रोना 157
रैम्प पर चलें बिलैया चाल 160
बुआ को मूँछें होतीं तो कक्का कहलातीं 163
कह देता है मुँह पर आईना 166
सब श्री शशि थरूर की ढोर-बाजार है : हुड़ीत : हुड़ीत 169
जिसको भी देखना हो : कई बार देखना 172
काले हैं तो क्या हुआ : दिलवाले हैं 175
सड़ी डुकरियें और रंगदारी का समाजशास्त्र 178
भागने वाले भगवान और भगवान बनाने वाले 181
दूसरों के बैडरूम में झाँकने वाले 184
गढ़ाकोटा वारे कक्का 188
महुआ वारे महावीर 191

''आज के युग में मानवीय सम्बन्ध जिस तरह यान्त्रिक और रसहीन होते जा रहे हैं उसके पीछे भौतिक उपलब्धियों की लालसा की मुख्य भूमिका है। व्यंग्य इस विसंगति की पड़ताल करते हुए इस परिवर्तन के अनुषांगिक प्रभावों की एक सतर्क व्याख्या करता है। शोषण के अस्त्र के रूप में धर्म की ध्वजा का उपयोग अब व्यर्थ हो गया है। समाज पर धर्म का न तो अब वैसा प्रभाव रहा है न नियन्त्रण। धर्म के स्थान पर राजनीति और धर्माचार्यों के स्थान पर राजनेताओं की भूमिका प्रमुख हो उठी है। इसलिए मध्यकालीन पाखण्ड, अन्याय, असंगति और विद्रूप के विरुद्ध जो भूमिका भक्ति आन्दोलन केविद्रोही सन्त कबीर निबाहते थे वही भूमिका आधुनिक सन्दर्भों में व्यंग्यकार निबाहते हैं। धर्म गए गुजरे जमाने की बात होती जा रही है। उसकी सामाजिक अर्थवत्ता धीरे-धीरे घट रही है। मध्यकालीन धर्म और ईश्वर के सिंहासनों पर विज्ञान और मनुष्य बैठ गया है। धार्मिक आचरण का स्थान राजनैतिक आचरण ने ले लिया है। अब राजनीति के बाहर कुछ नहीं रह गया है। सब उसके प्रत्यक्ष नियन्त्रण में है।''

– सुरेश आचार्य
'व्यंग्य का समाजदर्शन'

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032

₹ 200
9 789383 962129